Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

ARJUN BATCH

CLASS 11th | HISTORY

तीन महाद्वीपों में फैला हुआ साम्राज्य



अध्याय-2 | भाग-6

एकदम BASIC से!

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

आज क्या पढ़ेंगे ?



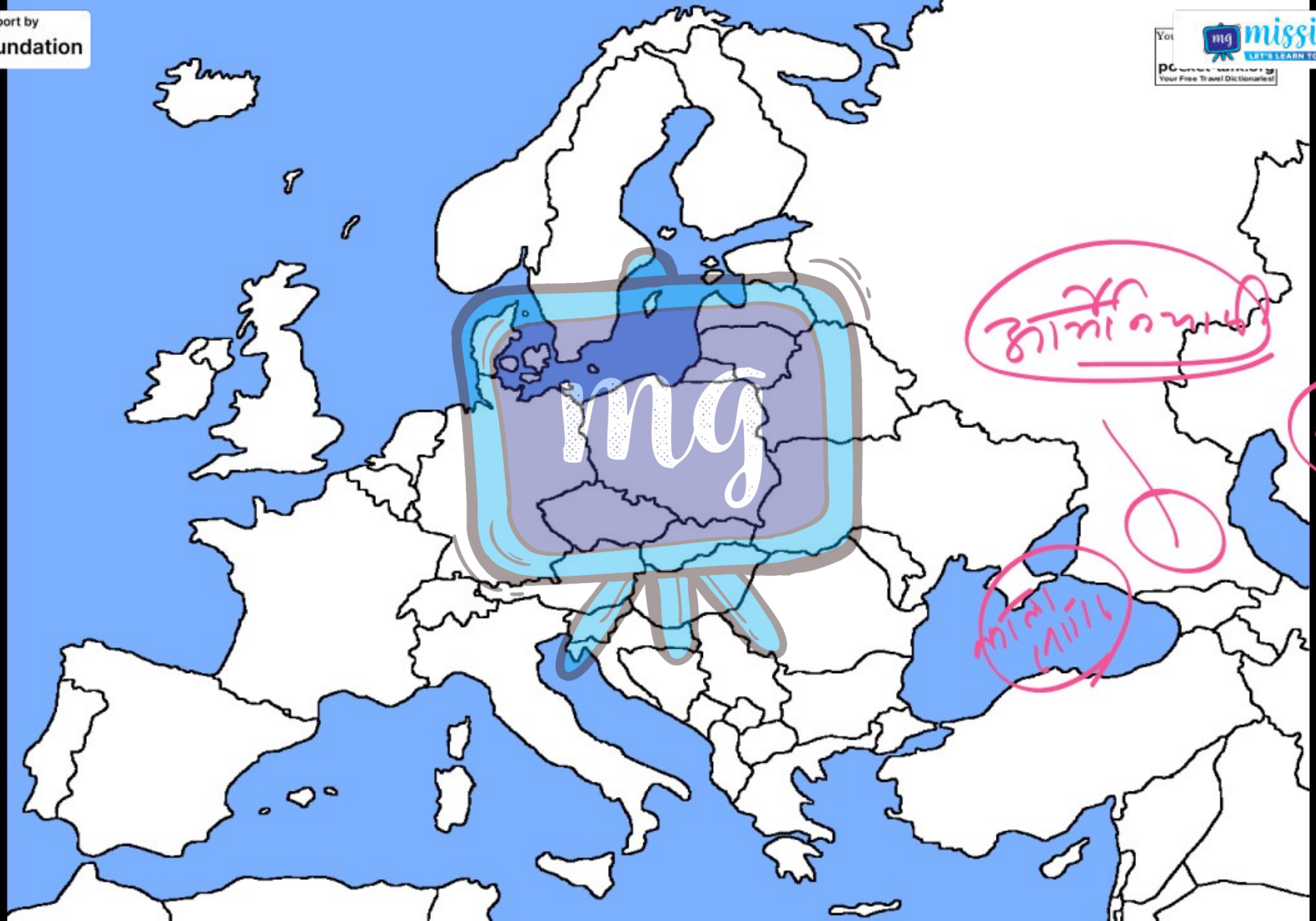
1. साक्षरता
2. संस्कृति
3. रोमन साम्राज्य की अर्थव्यवस्था

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



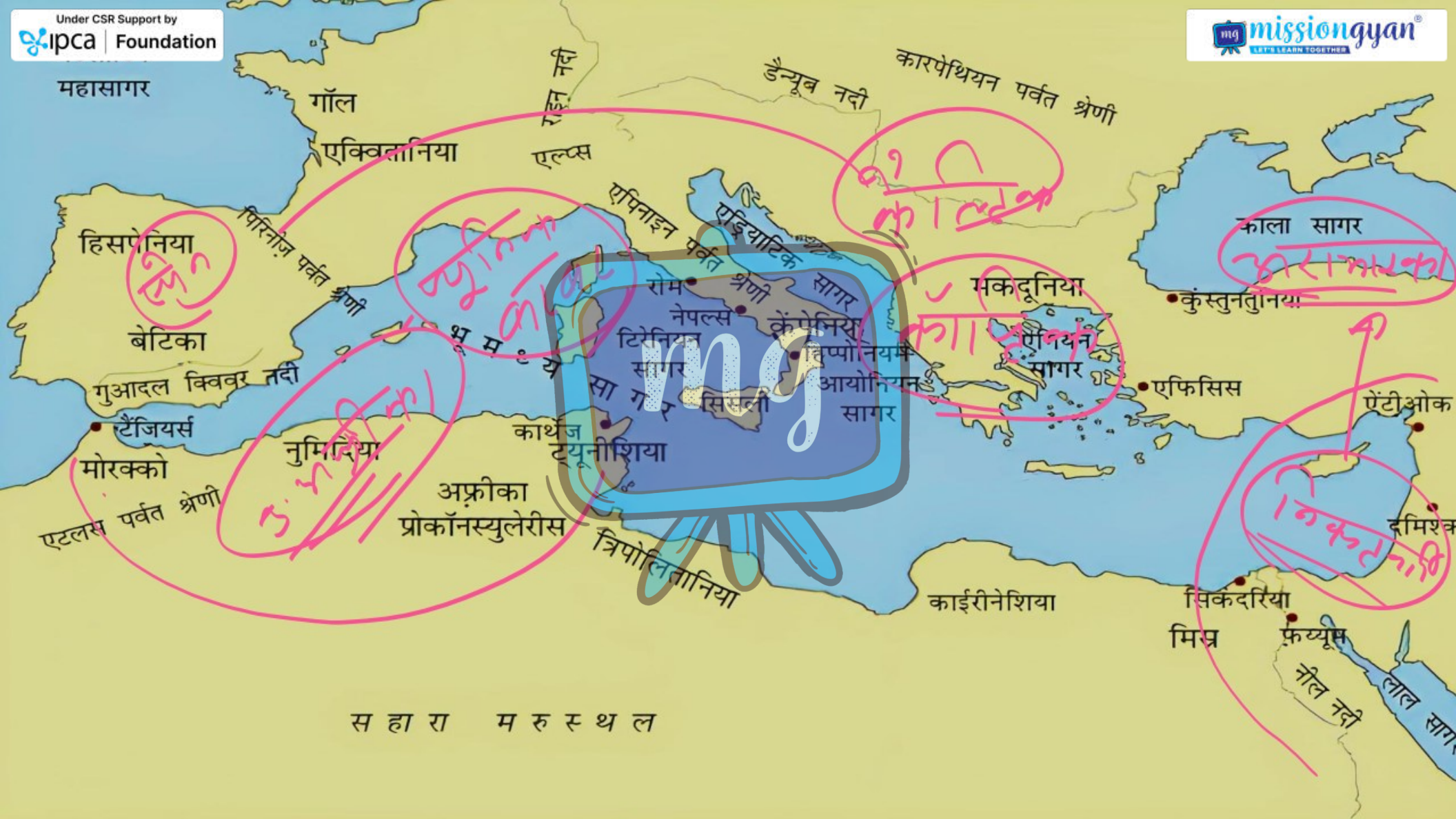
Under CSR Support by
ipca | Foundation



missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

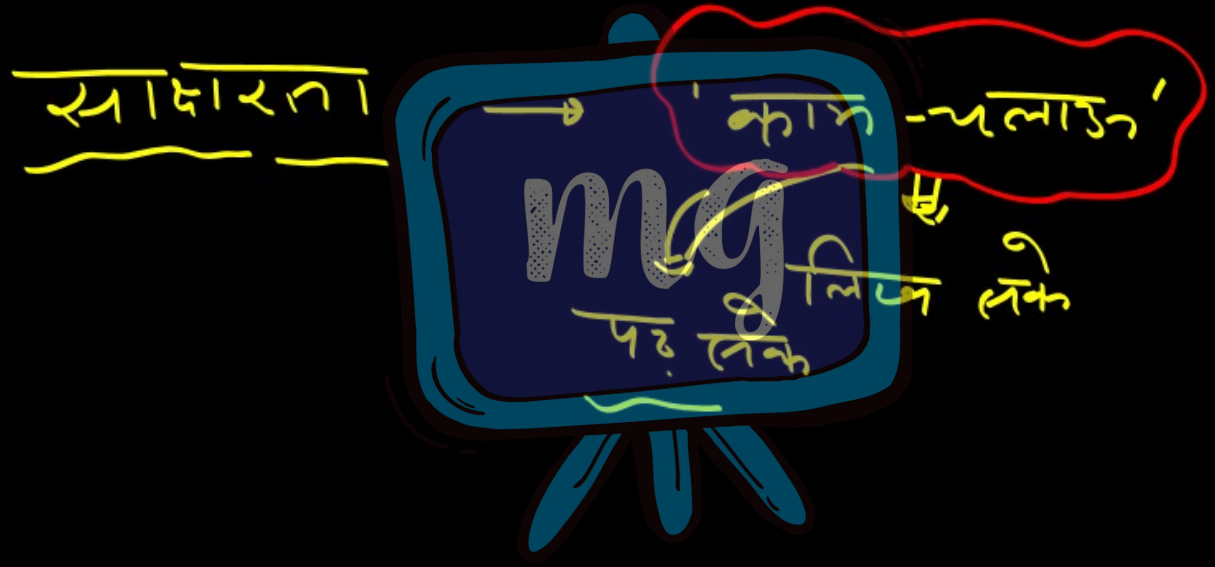


रोमन साम्राज्य का समाज और संस्कृति

- लिंग
- साक्षरता
- संस्कृति

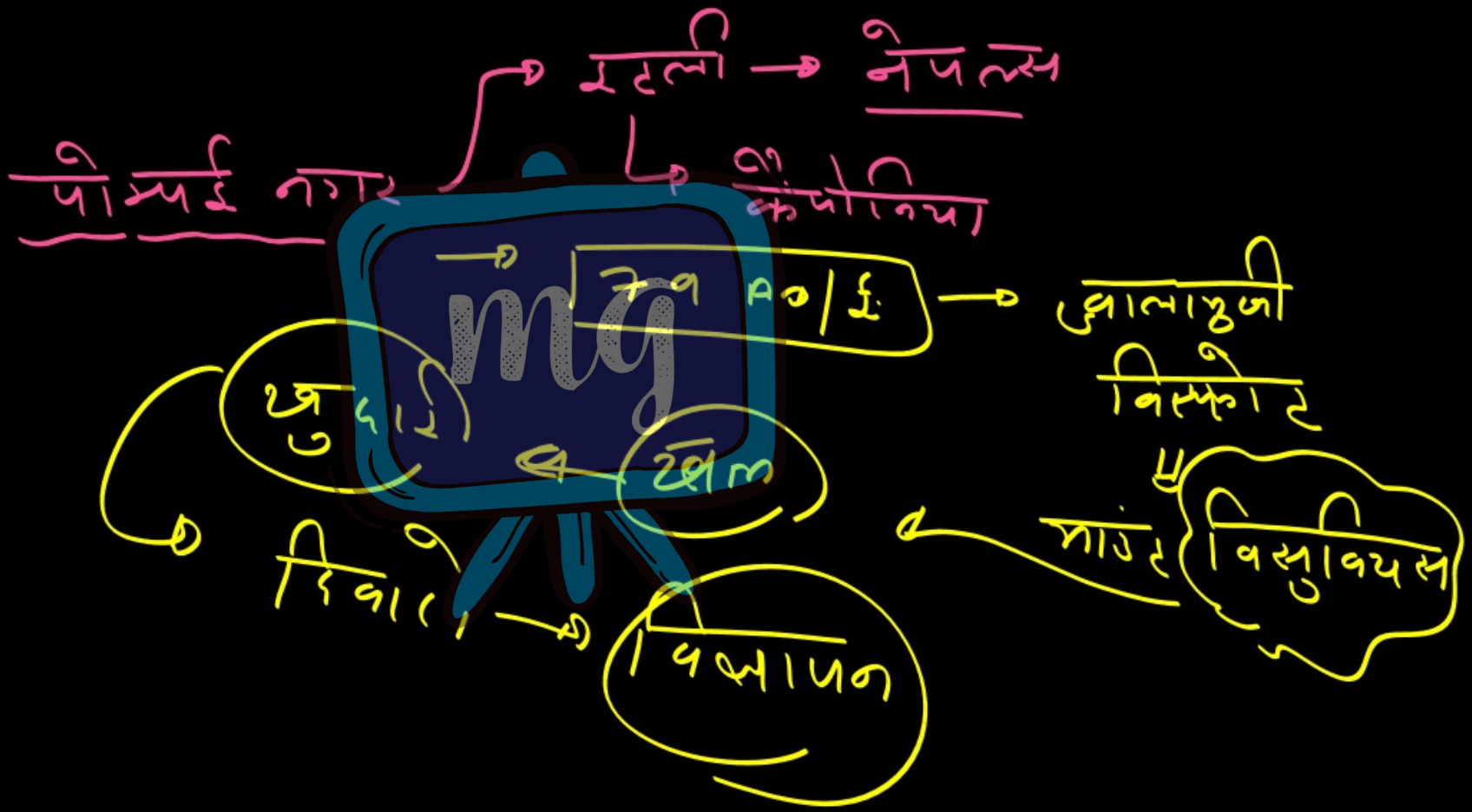
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

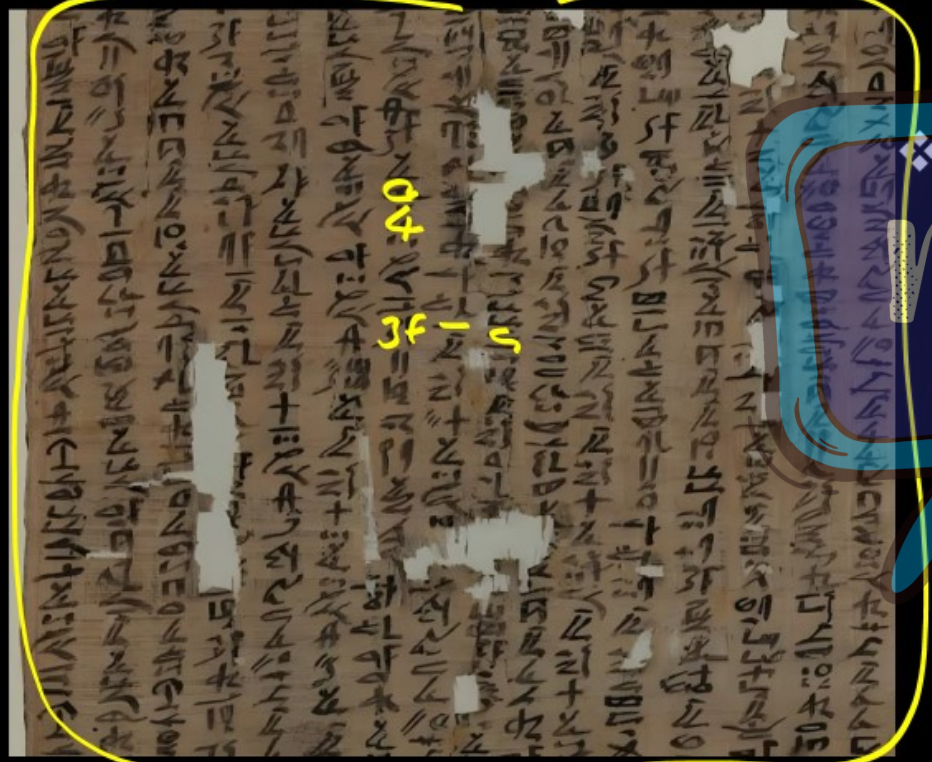


साक्षरता

- पोम्पेई नगर में कामचलाऊ साक्षरता के प्रमाण
  - पढ़ने और लिखने का दैनिक प्रयोग, प्रायः छोटे-मोटे संदर्भों में।
- पोम्पेई की दीवारों पर अंकित विज्ञापन
- मिस्त्र में सैकड़ों 'पैपाइरस' के साक्ष्य जिन पर औपचारिक - दस्तावेज़ जैसे कि संविदा-पत्र आदि लिखे हुए है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- पोम्पेई की मुख्य गलियों की दीवारों पर अंकित विज्ञापन और समूचे शहर में अभिरेखण पाए गए है।
- इसके विपरीत, मिस्त्र में आज भी सैकड़ों 'पैपाइरस' बचे हुए है जिन पर अत्यधिक औपचारिक – दस्तावेज़ जैसे कि संविदा–पत्र आदि लिखे हुए है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



संस्कृति

1. सांस्कृतिक विविधता
2. धार्मिक सम्प्रदायों तथा स्थानीय देवी-देवताओं की विविधता।
3. वेशभूषा की विविध शैलियां।
4. तरह-तरह के भोजन।
5. सामाजिक संगठनों तथा उनकी बस्तियों के अनेक रूप।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

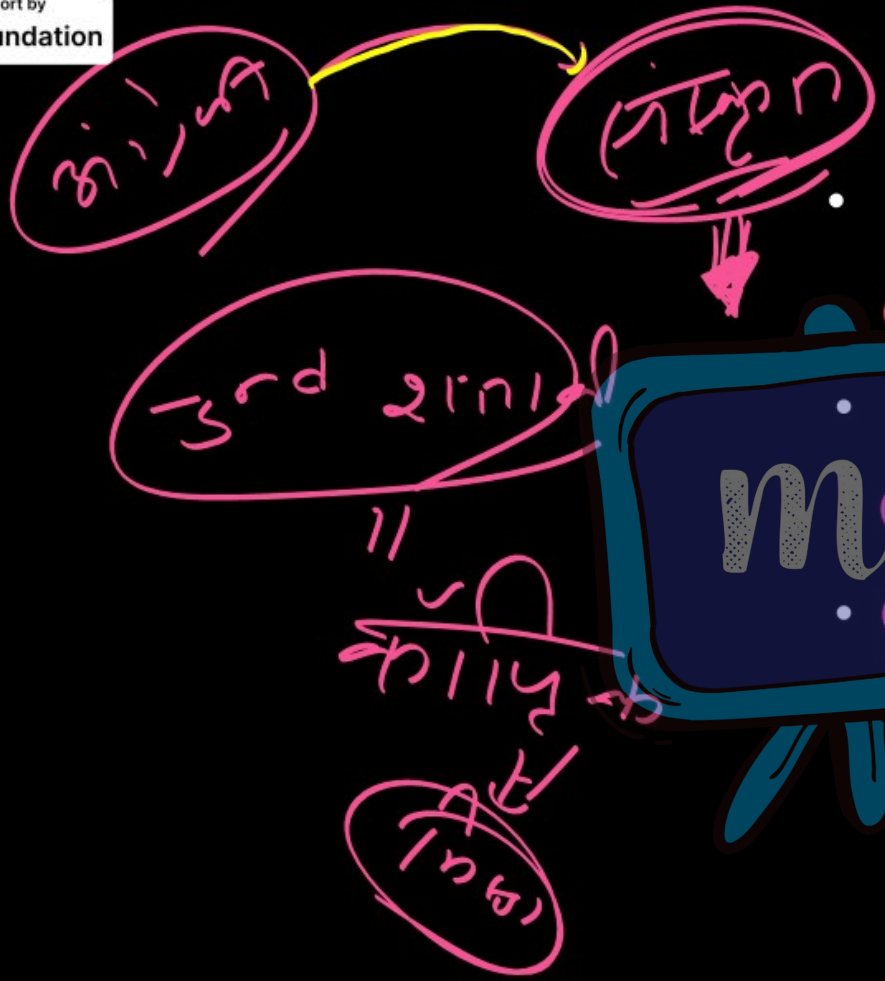
6. **भाषाएँ** → अरामाइक निकटवर्ती पूर्व (कम से कम फ़रात के पश्चिम में) की प्रमुख भाषा-समूह था।

क्षेत्र	भाषा
मिस्त्र	कॉप्टिक
उत्तरी अफ्रीका	प्यूनिक व बरबर
स्पेन तथा उत्तर-पश्चिम	कैल्टिक

- बहुत सी भाषाई संस्कृतियाँ पूर्णतः मौखिक थी। लिपियों का आविष्कार नहीं हुआ था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- जैसे – अर्मिनियाई भाषा का लिखना भी पाँचवी शताब्दी में शुरू हुआ।
- तीसरी शताब्दी के मध्य तक बाइबिल का कॉप्टिक भाषा में अनुवाद हो चुका था।
- कैल्टिक भाषा का लिखा जाना प्रथम शताब्दी के पश्चात् बंद ही हो गया क्योंकि लातिनी भाषा का प्रभाव बढ़ा।

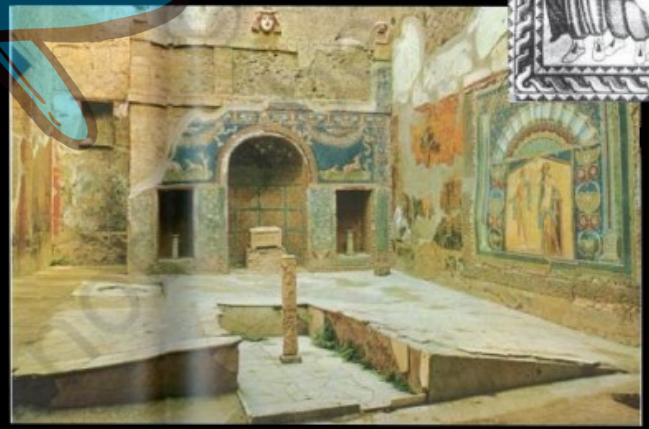
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

एडेसा में पच्चीकारी (दूसरी शती ई.)।

सीरिया के इस अभिलेख से पता चलता है कि यहाँ जो लोग दिखाए गए हैं वे राजा अबगर की पत्नी तथा परिवार के सदस्य हैं।





Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अर्थव्यवस्था के साधन



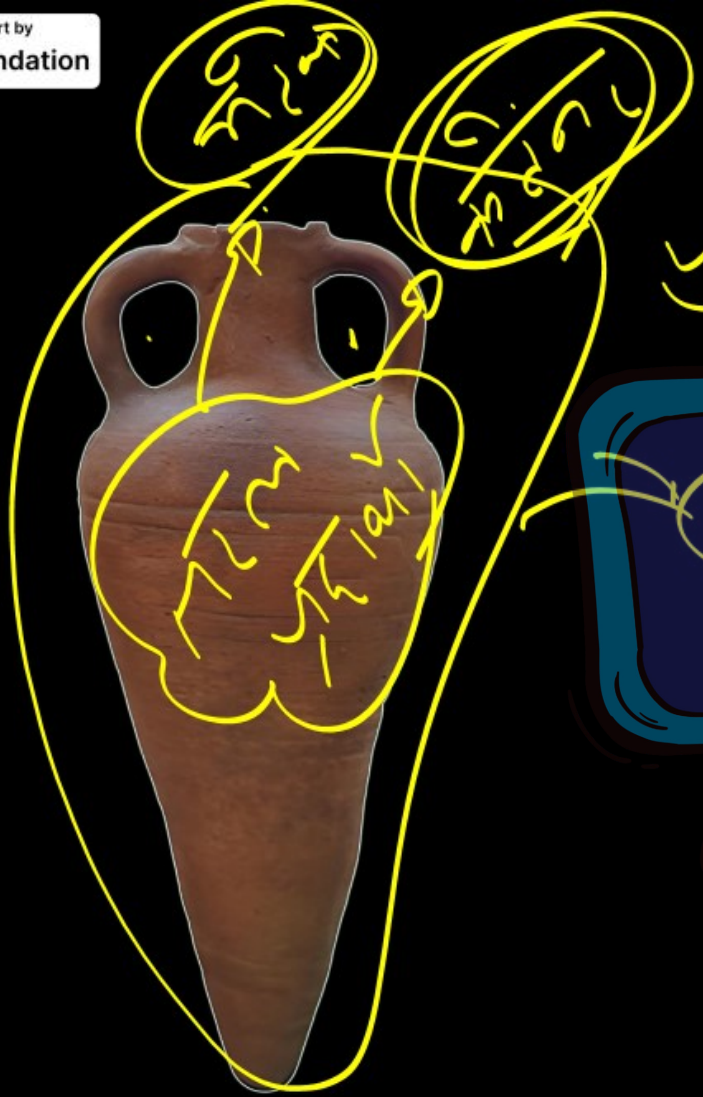
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- ये मुख्यतः स्पेन, गैलिक प्रांतों, उत्तरी अफ्रीका, सिस्त्र तथा अपेक्षाकृत कम मात्रा में इटली से आती थी।

एम्फ़ोरा

- शराब, जैतून का तेल तथा अन्य तरल पदार्थों की ढुलाई ऐसे मटकों या कंटनेरों में होती थी जिन्हें "एम्फ़ोरा" कहते थे।
- रोम में मोंटी टेस्टैकियो स्थल पर ऐसे 5 करोड़ से अधिक मटकों के अवशेष पाए गए हैं।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

एम्फोरा

- स्पेन में जैतून का तेल निकालने का उद्यम 140-160 ईस्वी के वर्षों में चरमोत्कर्ष पर था।

ड्रेसल-20

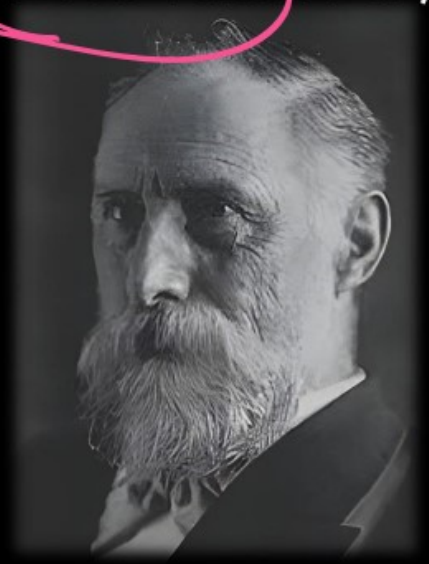
i. स्पेन में उत्पादित जैतून का तेल ऐसे कटेनरों में ले जाया जाता था जिन्हे ड्रेसल-20 कहते थे।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

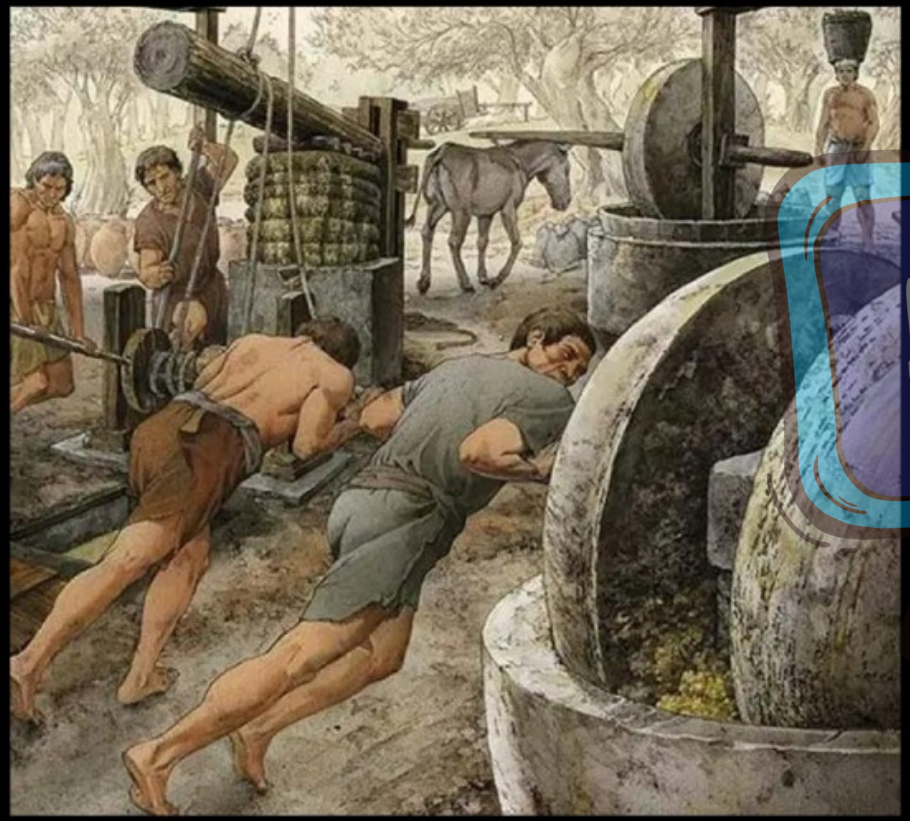
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

2. यह नाम हेनरिक ड्रेसल नामक पुरातत्त्वविद के नाम पर आधारित है।
3. ड्रेसल-20 नामक कंटेनरों के अवशेष भूमध्यसागरीय क्षेत्र में अनेक उत्खनन-स्थलों पर पाए गए हैं।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- भिन्न-भिन्न प्रदेशों के जमींदार एवं उत्पादक अलग-अलग वस्तुओं का बाजार हथियाने के लिए प्रतिस्पर्धा करते रहते थे।
- स्पैन के जैतून के तेल के उत्पादक अपने इतावली प्रतिद्वंदियों से तेल का बाजार छीनने में सफल हुए।
- बाद में उत्तरी अफ्रीका के उत्पादकों ने स्पेन के जैतून के तेल उत्पादकों जैसा महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- फिर 425 ई. के बाद एगियन, दक्षिणी एशिया-माइनर (तुर्की), सीरिया और फिलिस्तीनी व्यापारी अंगूरी शराब तथा जैतून-तेल के प्रमुख निर्यातक बन गए।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



1. इटली में कैम्पैनिया
2. मिस्त्र में फैय्यूम, गैलिली, बाइजैकियम, दक्षिणी गॉल (गैलिया)
3. बाएटिका (दक्षिणी स्पेन)

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

साम्राज्य के प्रमुख उर्वरता वाले क्षेत्र

1. इटली में कैम्पैनिया
2. मिस्त्र में फैय्यूम, गैलिली, बाइजैकियम (ट्यूनीसिया), दक्षिणी गॉल (गैलिया नार्बोनेंसिस)
3. बाएटिका (दक्षिणी स्पेन)

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- स्ट्रैबो तथा प्लिनी के अनुसार ये सभी प्रदेश साम्राज्य के घनी आबादी वाले प्रदेश थे।
- सबसे बढ़िया किस्म की अंगूरी शराब कैम्पैनिया से आती थी।
- सिसिली और बाइजैकियम रोम को गेहूँ का निर्यात करते थे।
- गैलिली में गहन खेती होती थी।
- इतिहासकार जोसिफ़स ने लिखा है: प्रदेशवासियों ने जमीन के एक-एक इंच टुकड़े पर खेती कर रखी है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- स्पेन का जैतून का तेल गुआडलक्विविर नदी के किनारों के साथ बसी जमींदारियों (फंडी) से आता था।
- नुमीडिया (आधुनिक अल्जीरिया) के क्षेत्रों में ऋतु-प्रवास व्यापक पैमाने पर होता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

☛ **ऋतु प्रवास :** ऊँचे पहाड़ी क्षेत्रों और नीचे के मैदानी इलाकों में भेड़-बकरियों तथा अन्य जानवरों को चराने के लिए चरागाहों की खोज में ग्वालों तथा चरवाहों का मौसम के अनुसार वार्षिक आवागमन।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- चरवाहे तथा अर्ध-यायावर अपने साथ में अवन आकार की झोपड़ियां (मैपालिया) उठाए इधर-उधर घूमते-फिरते रहते थे।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- उत्तरी अफ्रीका में रोमन जागीरों के विस्तार से चरागाहों की संख्या में कमी आई।
- खानाबदोश चरवाहों की आवाजाही भी नियंत्रित हो गई।
- स्पेन में भी, उत्तरी क्षेत्र बहुत कम विकसित था।
- इसमें अधिकतर केल्टिक भाषी किसानों की आबादी थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- ये पहाड़ियों की चोटियों पर बसे गांवों (कैस्टेला) में रहते थे।
- इस काल में जल-शक्ति से मिलें चलाने की प्रौद्योगिकी में ख़ासी प्रगति हुई।
- स्पेन की सोने और चाँदी की खानों में जल-शक्ति से खुदाई की जाती थी।
- उस समय सुगठित वाणिज्यिक और बैंकिंग व्यवस्था थी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मध्यम नदी द्रोणी

अपवाह क्षेत्र 2,000 से 20,000 वर्ग किलोमीटर

44 नदी द्रोणियाँ

कालिंदी, पेरियार, मेघना

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

लघु नदी द्रोणी

- अपवाह क्षेत्र 2.000 वर्ग किलोमीटर से कम।
- इसमें न्यून वर्षा के क्षेत्रों में बहने वाली बहुत सी नदियाँ शामिल हैं।

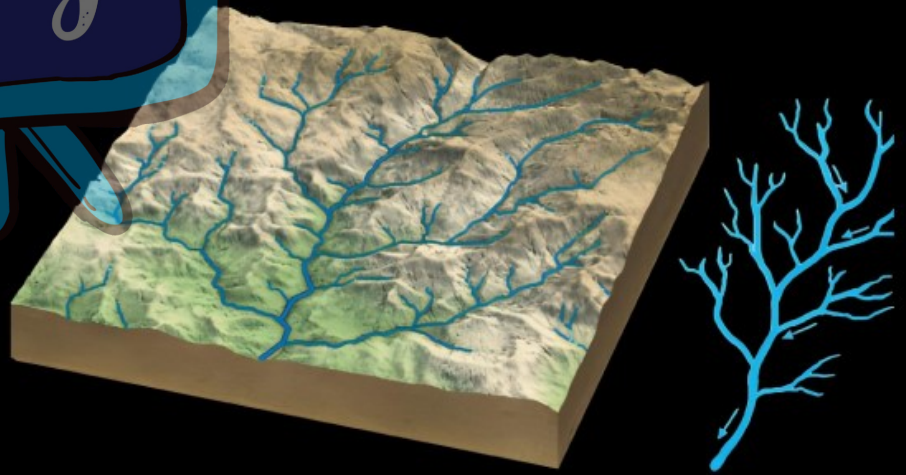
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मुख्य अपवाह प्रतिरूप

वृक्षाकार प्रतिरूप

- पेड़ की शाखाओं के अनुरूप
- उदाहरण – उत्तरी मैदान की नदियाँ

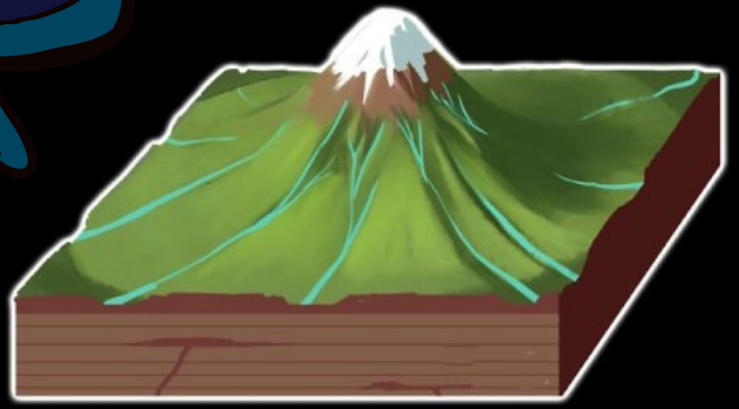


Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अरीय (Radial) प्रतिरूप

- नदियाँ किसी पर्वत से निकलकर सभी दिशाओं में प्रवाहित
- उदाहरण - अमरकंटक पर्वत श्रृंखला से निकलने वाली नदियाँ

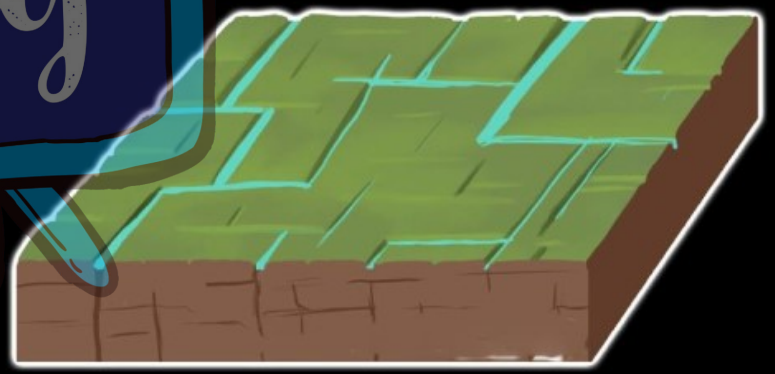


Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

जालीनुमा (Trellis) अपवाह प्रतिरूप

- मुख्य नदियाँ एक-दूसरे के समांतर प्रवाहित
- सहायक नदियाँ उनसे समकोण पर मिलती हों,



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अभिकेंद्री (Centripetal) प्रतिरूप

सभी दिशाओं से नदियाँ बहकर किसी झील या गर्त में विसर्जित



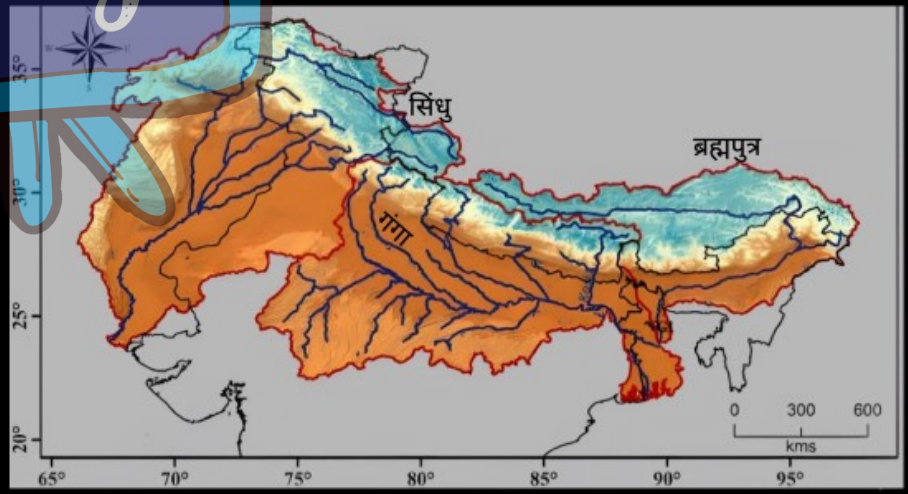
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नदियों के उद्गम स्त्रोत

हिमालय पर्वत

सिंधु, झेलम, चिनाब, रावी, व्यास, सतलुज, गंगा, यमुना, शारदा, घाघरा, गंडक, कोसी, ब्रह्मपुत्र



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



पश्चिमी घाट

- प्रायद्वीपीय पठार की बड़ी नदियों का उद्गम स्थल
- बंगाल की खाड़ी अपवाह तंत्र की नदियाँ

नोट

नर्मदा व तापी दो बड़ी – प्रायद्वीपीय नदियाँ, इसका अपवाद है जो अपना जल अरब सागर में ले जाती हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

भारत के अपवाह तंत्र



उद्गम के प्रकार
प्रकृति व विशेषताओं
के आधार पर

1. हिमालयी अपवाह तंत्र
2. प्रायद्वीपीय अपवाह तंत्र

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नोट

चम्बल, बेतवा, सोन जैसी नदियों के वर्गीकरण में समस्या उत्पन्न होती है, क्योंकि उत्पत्ति और आयु में ये हिमालय से निकलने वाली नदियों से पुरानी है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

हिमालयी अपवाह तंत्र

- हिमालयी अपवाह तंत्र भूगर्भिक इतिहास के एक लंबे दौर में विकसित हुआ।
- मुख्यतः गंगा, सिंधु व बह्मपुत्र नदी द्रोणियाँ नदियाँ बारहमासी हैं, क्योंकि ये बर्फ पिघलने व वर्षण दोनों पर निर्भर गहरे महाखड्डों (Gorges) से गुजरती हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

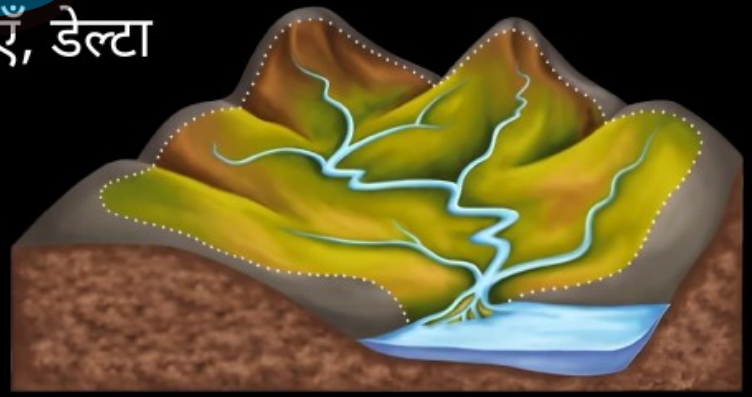
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अपरदनात्मक स्थलाकृतियाँ

- महाखड्ड ,V-आकार की घाटियाँ, क्षिप्रिकाएँ व जलप्रपात

निक्षेपणात्मक स्थलाकृतियाँ

- समतल घाटियाँ, गोखुर झीलें. बाढ़कृत मैदान, गुंफित वाहिकाएँ, डेल्टा



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



नोट

- हिमालय क्षेत्र में इन नदियों का रास्ता टेढ़ा-मेढ़ा है। परंतु मैदानी क्षेत्र में इनमें सर्पाकार मार्ग में बहने की प्रवृत्ति पाई जाती है और अपना रास्ता बदलती रहती हैं।
- **कोसी नदी-** बिहार का शोक (Sorrow of Bihar) अपना मार्ग बदलने के लिए कुख्यात

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

हिमालय पर्वतीय अपवाह तंत्र का विकास



- शिवालिक या इंडो-ब्रह्म नदी
  - मायोसीन कल्प में (लगभग 2.4 करोड़ से 50 लाख वर्ष पहले
  - हिमालय के संपूर्ण अनुदैर्ध्य विस्तार के साथ असम से पंजाब तक
  - अंत में निचले पंजाब के पास सिंध की खाड़ी में अपना पानी विसर्जिन करती

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

धारणा की पुष्टि



सरोवरी उद्गम और इनका जलोढ़ निक्षेप (रेत, मृत्तिका, चिकनी मिट्टी, गोलाश्म व कोंगलोमेरेट)

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

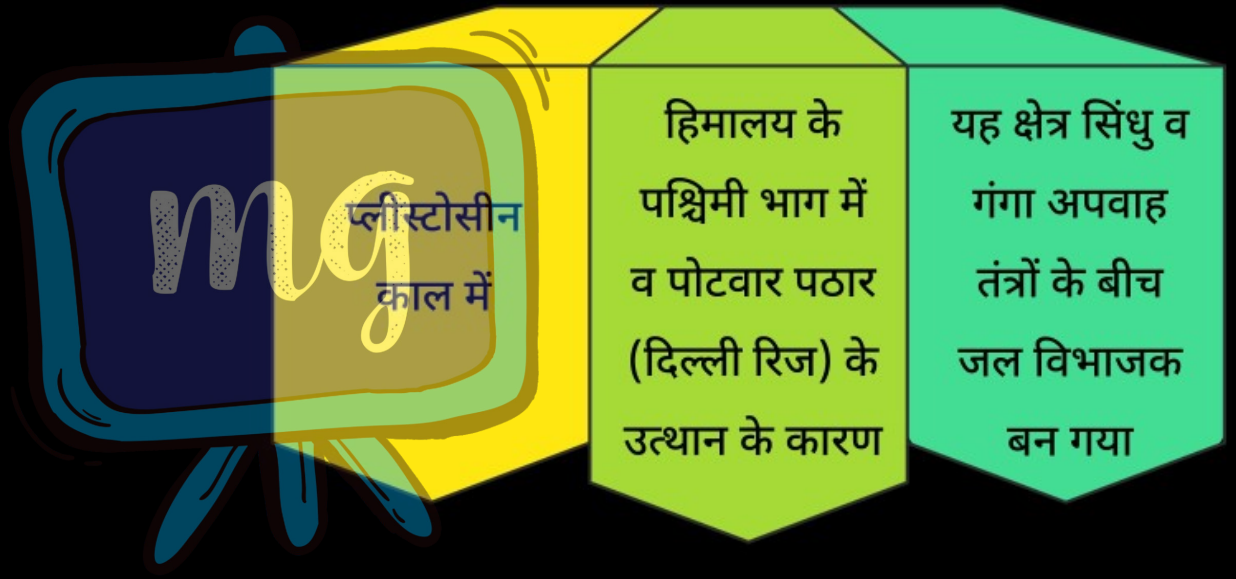
कालांतर में इंडो-ब्रह्म नदी तीन मुख्य अपवाह तंत्रों में बँट गई

1. पश्चिम में सिंध और इसकी पाँच सहायक नदियाँ
2. मध्य में गंगा और हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ
3. पूर्व में बह्मपुत्र का भाग व हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

विशाल नदी का विभाजन



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नोट

इसी प्रकार मध्य प्लीस्टोसीन काल में राजमहल पहाड़ियों और मेघालय पठार के मध्य स्थित माल्दा गैप का अधोक्षेपण हुआ जिसमें गंगा और बह्मपुत्र नदी तंत्रों का दिपरिवर्तन हुआ और वे बंगाल की खाड़ी ओर प्रवाहित हुई।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

प्रायद्वीपीय अपवाह तंत्र



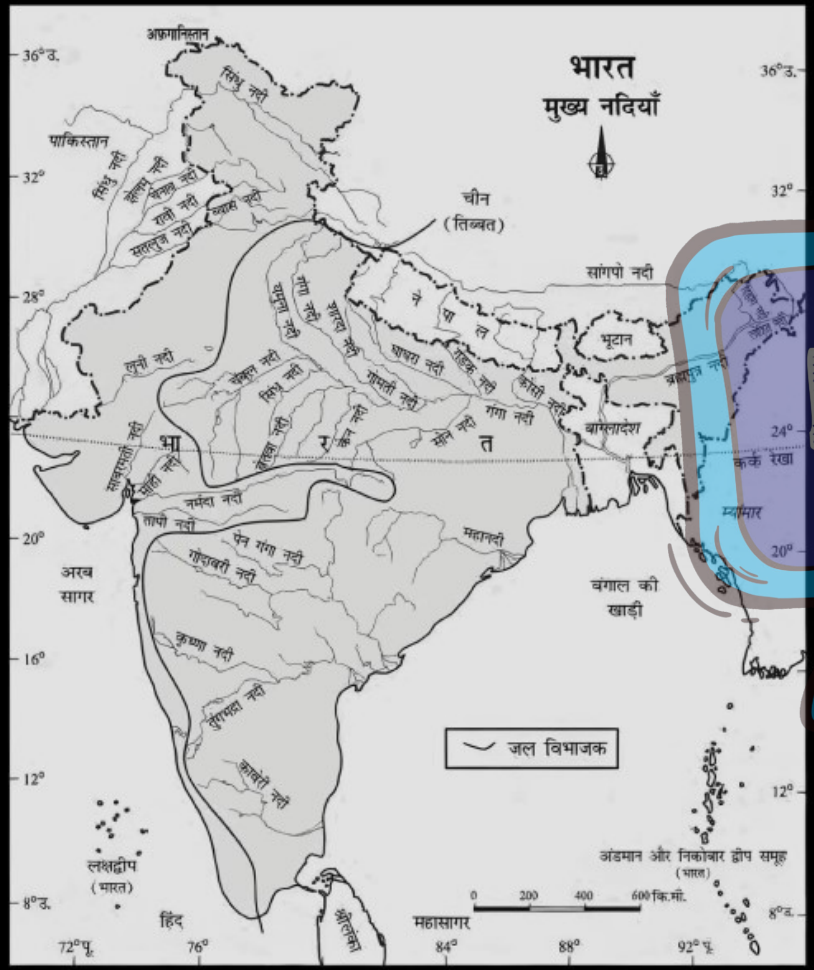
हिमालयी अपवाह तंत्र से पुराना

प्रमाण - नदियों की प्रौढ़ावस्था

नदी घाटियों के चौड़ा व उथला होना

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



जल-विभाजक- पश्चिमी घाट

- बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली प्रायद्वीपीय नदियों और अरब सागर में गिरने वाली छोटी नदियों के बीच
- नर्मदा और तापी को छोड़कर अधिकतर प्रायद्वीपीय नदियाँ पश्चिम से पूर्व की ओर बहती हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



प्रायद्वीप के उत्तरी भाग में निकलने नदियाँ

- चंबल, सिंध, बेतवा, केन व सोन नदियाँ गंगा नदी तंत्र का अंग

प्रायद्वीप के अन्य प्रमुख नदी-तंत्र

- महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



प्रायद्वीपीय नदियों की विशेषताएँ

1. ये एक सुनिश्चित मार्ग पर प्रवाहित
2. विसर्प निर्माण नहीं
3. ये बारहमासी नहीं हैं, यद्यपि भ्रंश घाटियों में बहने वाली नर्मदा और तापी इसका अपवाद

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

प्रायद्वीपीय अपवाह तंत्र का उद्विकास

तीन प्रमुख भूगर्भिक घटनाओं ने आज के प्रायद्वीपीय भारत के अपवाह तंत्र को स्वरूप प्रदान किया है:

1. आरंभिक टर्शियरी काल के दौरान

- प्रायद्वीप के पश्चिमी पार्श्व का अवतलन या धँसाव
- जिससे यह समुद्रतल से नीचे चला गया
- इससे मूल जल संभर के दोनों ओर नदी की सामान्यतः सममित योजना में गड़बड़ी हो गई

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

2. हिमालय में होने वाले प्रोत्थान

- प्रायद्वीप खंड के उत्तरी भाग का अवतलन
- परिणामस्वरूप भ्रंश द्रोणियों का निर्माण



नर्मदा और तापी इन्हीं भ्रंश घाटियों में बह रही हैं और अपरद पदार्थ से मूल दरारों को भर रही हैं। इसीलिए, इन नदियों में जलोढ़ व डेल्टा निक्षेप की कमी पाई जाती है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

3. **इसी काल में प्रायद्वीप खंड उत्तर-पश्चिम दिशा से, दक्षिण-पूर्व दिशा में झुक गया।**
   - इसका अपवाह बंगाल की खाड़ी की ओर उन्मुख हो गया।